Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

VOL- IX | ISSUE- V | MAY | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

साठोत्तर काल के उपन्यासों की राजनीतिक परिरिस्थतियॉं

अनिता सहू
शोधार्थी, टांटिया विश्वविद्यालय, गंगानगर

डॉ. दशरथ माचरा
Research Supervisor, Tantia Universtiy
Dmpallu@gmail.com

साठोत्तरी काल को मोहभंग का काल माना जाता है। सन् ६० तक पहुंचते–पहुंचते अपनी अपेक्षाओं को पूर्ण न होते देख जनता को खोखले वायदों की वास्तविकता समझ आने लगी कि सुविधाओं के नाम पर आष्वासनों के वायवी वक्तव्य सुनाये जाते हैं, एक ओर आम जनता के स्वतंत्रता प्राप्ति से जो स्वप्न संजोये थे वे एक–एक करके चकनाचूर हो गये। उनके दु:ख–दर्द में कोई परिवर्तन नही हुआ। पहले जहाँ लूटपाट, षोशण एवं अत्याचार का काम विदेषी सत्ता कर रही थी, वही काम अब देष के नेता कर रहे थे। देष के नेताओं के इस घिनौने रूप को देखक आम जनता का मोह भंग होना स्वाभाविक था। इसी तरह सन् १९६२ में हिन्दी चीनी भाई का नारा लगाने वाले विष्वासघाती, चीन ने भारत वर्श पर आक्रमण करके उसके कई वर्गमील क्षेत्र पर अधिकार कर लिया, जिससे भारत की प्रतिश्ठा को करारा झटका लगा और पण्डित जवाहर लाल का विष्वषान्ति का स्वप्न, पंचषील के सिद्धान्त चकनाचूर हो गये। उनकी षान्ति प्रिय नीति को इतना आघात लगा कि जिससे उनका २७ मई १९६४ को स्वर्गवास हो गया। उनके बाद लाल बहादुर षास्त्री देष के प्रधान मंत्री बने। चीन की तर्ज पर ही पाकिस्तान ने १९६५ में भारत पर आक्रमण कर दिया पर उसे पराजय का मुह देखना पड़ा। इस युद्ध के लिए भारत वर्श को भी एक बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। युद्ध विराम के लिए ताषकंद समझौता करने गये हमारे देष के दंबग प्रधान मंत्री लाल बहादुर षास्त्री का ११ जनवरी १९६६ को दिल का दौरा पड़ने से स्वर्गवास हो गया। इसके पष्चात् श्रीमती इन्दिरा गांधी देष की प्रथम महिला प्रधानमंत्री बनी।

सन् १९६७ को देष में लोकसभा का चौथा आम चुनाव हुआ। यह चुनाव कई दृश्टियों से पूर्व के चुनावों से भिन्न था। स्वतंत्रता के बाद चौथा आम चुनाव पहला चुनाव था, जो पंडित नेहरू के करिष्मार्थ व्यक्तित्व के बिना लड़ा गया था। यद्यपि इस चुनाव में कांग्रेस बहुमत प्राप्त करने में सुफल हुई और इन्द्रा गांधी पुन: देष की प्रधानमंत्री बन गई तथापि इससे भारतीय राजनीति में कांग्रेस का एकाधिकार समाप्त हो गया था। यही कारण है कि जहां तीसरे चुनाव में कांग्रेस को ३६१ स्थान प्राप्त हुए थे, वहां चौथे चुनाव में केवल २८३ स्थान ही प्राप्त हुए थे। अनेक राज्यों में गैर कांग्रेसी सरकारें बनी, जिससे केन्द्र राज्य सम्बन्धों में संघर्श और तनाव का युग प्रारम्भ हो गया। भारतीय राजनीति में दल बदल की दूशित प्रवृत्ति प्रारम्भ हो गई, जिससे राज्यामें अस्थिर राजनीति का दौर प्रारम्भ हो गया।

इन्द्रागांधी के इस कार्यकाल में बांगला देष के निर्माण को रोकने के लिए पाकिस्तान ने १६ दिसम्बर, १९७१ को भारत वर्श पर हमला कर दिया। १४ दिनांक के इस युद्ध में पाक को फिर मुंह की खानी पड़ी। भारत की इस विजय से देष में इन्द्र गांधी की बहुत प्रषंसा हुई और वह देषवासियों की बहुत प्रिय बन गई। इसी कारण देष में होने वाले १९७१ के पाचवें आम चुनाव में इन्द्रागांधी की कांग्रेस को महान् विजयी प्राप्त हुई और वह लोक सभा में ३५० स्थान प्राप्त करके तीसरी बार प्रधानमंत्री बनी। इन्द्रागांधी की इस विजय को निर्वाचित क्रांति, एक तुफान, एक चमत्कार, एक लहर और एक झंझावत जैसे अनेक नाम दिये गये। इस चुनाव से एक ओर देष में उत्पन्न राजनीतिक अस्थिरता समाप्त हो गई और दल–बदल का घातक दौर समाप्त हो गया। इन्द्रागांधी के नेतृत्व की भी धाक जम गई और केन्द्र राज्य सम्बन्धों में सुधार हो गया। पर १९७५ में राजनीतिक अव्यवस्था चरम सीमा पर पहुंच गयी, जिससे निबटने के लिए २६ जून, १९७५ को देष में प्रथम बार आपात स्थिति घोशित की गई। इस आपात स्थिति से नौकरषाही की निरंकुषता बढ गई थी अखबारों की आवाज को कुंद कर दिया, जिससे जनता में अत्यधिक

आक्रोष फैल गया। जनता के इसी आक्रोष के कारण १९७७ के छठे आम चुनाव में इन्द्रागांधी पराजित हुई देष में पहली बार गैर कांग्रेस सरकार बनी थी और मोरारजी देसाई देष के प्रधानमंत्री बने। पर विभिन्न घटकों की यह सरकार अधिक समय तक चली नही पायी और इस गैर कांग्रेसी सरकार का पतन हो गया। इस तरह १९७५ को अपातकाल चुनाव, सत्ता परिवर्तन, दल–बदलू नेता, वोट की राजनीति आदि के कारण भ्रश्टाचार का प्रमुख केन्द्र राजनीति बन गई है। विभिन्न घटकों से बनी हुई सरकार और घटकों की आपसी कलह से जनता का मोह भंग हो गया और इसी कारण १९७९ में जो चुनाव हुए उसमें इन्द्रागांधी फिर देष की प्रधानमंत्री बनने में सफल हो गई। जनता पार्टी की आपसी फूट के कारण पहले देसाई सरकार का एवं बाद में चरण सिंह सरकार का पतन हो गया और देष में जनवरी १९८० में सातवी लोकसभा के मध्यावधि चुनाव हुए, जिसमें कांग्रेस को दो–तिहाई से बहुमत मिला और इन्द्रागांधी फिर देष की प्रधानमंत्री बनने में सफल हो गई। लोकसभा में विरोधी दलों की स्थिति नगण्य हो गई। जून १९८० में ९ राज्यों की विधान सभाओं के चुनाव के बाद एकात्मकता के स्वर पुनः पूरी प्रबलता के साथ मुखरित होने लगे। पर दुर्भाग्य से ३१ अक्टूबर १९८४ को आंतकवादियों ने इन्द्रा जी की हत्या कर दी और देष में पुनः आंतक, लूट–पाट एवं अव्यवस्था छा गई। इन्द्रागांधी की हत्या के बाद राजीव गांधी को प्रधानमंत्री बनाया गया और आठवीं लोकसभा के चुनाव में जनता ने कांग्रेस को भारी बहुमत से जिताया और आठवीं लोकसभा के चुनाव में जनता ने कांग्रेस का भारी बहुमत से जिताया और राजीव गांधी पुनः प्रधानमंत्री बनने में सफल हो गये। उन्होनें देष को समय के अनुसार नया रूप देने का प्रयास किया था। किन्तु जल्दी ही बोफोर्स काण्ड आदि के सामने आने पर वे कांग्रेस की भ्रश्ट संस्कृति के प्रतीक बन गये। अपनी मां की तरह उनकी भी २१ मई १९९१ को एक बम काण्ड में हत्या कर दी गई।

राजनीतिक दलों के कमजोर नेतृत्व एवं नये–नये क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के कारण नवीं, ग्याहरवीं, एवं बारहवीं लोकसभा के जो चुनाव हुए उसमें किसी भी लोकसभा का कार्यकाल पूरा नहीं हो पाया। वी.पी. सिंह, चन्द्रषेखर, अटल बिहारी वाजपेयी, एच.डी. देवेगौड़ा एवं आई के गुजराल आदि अनेक थोड़े – थोड़े समय के लिए प्रधानमंत्री बने और बहुमत के अभाव में निरन्त इनकी सरकारों का पतन होता गया। यद्यपि १९९१ में दसवीं लोकसभा के जो चुनाव हुए उसमें भी किसी दल को बहुमत प्राप्त नहीं हुआ पर कांग्रेस को लोकसभा में सर्वाधिक स्थान प्राप्त हुए और पी.वी. नरसिंह राव देष के प्रधानमंत्री बने। १९९१ में तेरहवी लोकसभा के चुनाव हुए जिसमें भारतीय जनता पार्टी एवं उनके सहयोगी दलों को स्पश्ट बहुमत प्राप्त हुआ। और अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री बने। मई २००४ में चौदहवीं लोकसभा के चुनाव हुए जिसमें मनमोहन सिंह के नेतृत्व में संयुक्त प्रगतिषील गठबन्धन की मिली जुली सरकार बनी और यह सरकार भी अपना कार्यकाल पूरा करने में सफल हो गई। लोकसभा के पिछले कई चुनावों से यह स्पश्ट हो गया है कि अब एक दल की सरकार बनने का समय समाप्त हो गया है। वस्तुतः आज कोई भी राजनीतिक दल अखिल भारतीय दल नही रहा है। इन स्थितियों के परिणाम स्वरूप त्रिषुक लोकसभा और खंडित जनादेष की महामारी ने अब केन्द्र को ग्रसित कर लिया है। राजनीतिज्ञों के भ्रश्ट चरित्र सत्ता मोह, नौकरषाही, भाई–भतीजा वाद, अनैतिकता आदि रूपों से जनता पूर्णतः परिचित हो गयी। प्रांतीयता, जातिवाद, क्षेत्रवाद, भाई–भतीजावाद, कालाबाजारी, जर्जन अर्थ तंत्र, भ्रश्टाचार, साम्प्रदायिकता की जडे और गहरी हो गई।

हमारे देष में आज राजनीतिज्ञ सत्ता प्राप्ति एवं सत्ता पर अधिकार बनाये रखने के लिए सभी असम्भव, नैतिक, अनैतिक कार्य करते रहते हैं। इसी कारण आज जनता का राजनीतिज्ञों से विष्वास उठ गया है। आज समा में नैतिकता का सर्वाधिक त्याग सत्ता लोलूप राजनीतिज्ञों ने ही कर रखा है। आज की भ्रश्ट राजनीति ने जीवन के सभी क्षेत्रों में भ्रश्टाचार को पनपा दिया है और अधिकांष लोग इसके प्रभाव में आ गये है। भ्रश्ट राजनीति के कारण आज सार्वजनिक जीवन में ऐसे आदर्ष नही रहे, जिनका कोई पीढी अनुकरण कर सके। सभी नेता येन–केन प्रकेरण कुर्सी प्राप्त करना चाहते हैं। डॉ. त्रिपाठी के अनुसार प्रत्येक का ध्यान वोट और कुर्सी की ओर है। वोट और कुर्सी का ही दूसरा नाम राजनीति बन गया है। विभिन्न घटकों की बनी हुई सरकार और घटकों की आपसी कलह से जनता का मोह भंग हो गया है।

साठोत्तर काल में हमारे देष के नेताओं का इतना नैतिक पतन हो गया है कि उनके लिए देष भक्ति एवं राश्ट्रहित का कोई महत्व नहीं है। उनके लिए महत्व केवल चुनाव में विजय प्राप्त करने का रह गया है। दुर्भाग्य से जब इस पर्व (चुनाव) की तैयारी के लिए वोट मांगने को लेकर जनता के द्वार राजनीतिक दल जाते है, तब वे जातीय–धर्म–भाशा और क्षेत्रवाद जैसे कई नुस्खे अपनाकर जनता को कई वर्गो में बांट देते है। यह सिलसिला आगे भी चलता रहता है, प्रकान्तर में लोग–बाग इसी गुणा–भाग में जुट जाते है और राश्ट्रहित एवं देषभक्ति की बात कहीं दूर कोने में सिसकियां भरने लगती हैं।

आज के नेताओं की स्वार्थी भावना के कारण अब राजनीतिक परिवेष से सत्य, अहिंसा, त्याग, सेवा, नैतिकता आदि जीवन मूल्य और आदर्ष प्रायः समाप्त हो गये है।

संदर्भ :–

१. मधुमती – अगस्त, १९७८ – पृ. २३
२. डॉ. मदन कवेलिया– राजस्थान की साठोत्तरी हिन्दी कहानी सामसामयिक परिवेष–पृ.१४
३. डॉ. राम विलास षर्मा– स्वाधीनता और राश्ट्रीय साहित्य – पृ०३३
४. डॉ. धर्मचन्द विद्यालंकर – नयी कविता में प्रगतिषील चेतना– पृ० ७०
५. रामचन्द्र षुक्ल – हिन्दी साहित्य का इतिहास – पृ०
६. डॉ. नीलम राठी – साठोत्तरी हिन्दी नाटक – पृ० ११२
७. डॉ. सुभाश काष्यप – विष्वप्रकाष गुप्त– संसद का इतिहास भाग – एक पृ. २४६
८. डॉ. आर.एन. त्रिवेदी – भारतीय सरकार एवं राजनीति – पृ.३१८
९. डॉ. आर. एन. त्रिवेदी – डॉ.एम.पी.राय – भारतीय सरकार एवं राजनीति पृ. ३२०
१०. डॉ. सुषील वर्मा – आधुनिक समाज की नारी चेतना– पृ० ३
११. डॉ. सौ. मंगल कप्पीकरे – साठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी पृ. ७६
१२. डॉ. पुखराज जैन – भारतीय राज व्यवस्था – पृ. ४०
१३. डॉ. नीलम राठी – साठोत्तरी हिन्दी नाटक – पृ१६
१४. डॉ. सुभाश काष्यप– विष्व प्रकाष गुप्त– संसद का इतिहास भाग –दो पृ. ३४९
१५. डॉ. पुखराज जैन– भारतीय राज व्यवस्था – पृ. ३१७
१६. डॉ. नीलम राठी – साठोत्तरी हिन्दी नाटक – पृ. ११२
१७. डॉ. नगेन्द्र नाथ त्रिपाठी – साठोत्तरी हिन्दी नाटकों में स्त्री पुरूश संबंध पृ. १०५